B-Ed. 1st Year
Gender, School and Society
Course - 6
Lecture - 25

Nakul Sah
Assistant Professor

पाठ्य पुस्तकों में लिंग आधारित पक्षपात

पाठ्य - पुस्तकों में लिंगीय प्रतिनिधित्व या पक्षपात निम्न उदाहरणों से समझाया जा सकता है:-

1. पाठ्य पुस्तकों में सामाजिक लिंग आधारित वास्तविकता की अभिव्यक्ति

विशेष तौर पर पाठ्य पुस्तकीय ज्ञान (जिसे विद्यालयों में 'अधिकारिक ज्ञान' के रूप में प्रस्तुत किया जाता है) का विश्लेषण इस संदर्भ में करना आवश्यक हो जाता है कि किस तरह से पाठ्यपुस्तकें सामाजिक लिंग आधारित वास्तविकता को अभिव्यक्त करती है? व वे कौन सी विशेषताएँ हैं जो पुस्तकों में अभिव्यक्त होती हैं तथा नारीत्व व पुरुषत्व आधारित व्यवहार को मजबूत करती हैं।

2. महिलाओं को उसकी परंपरागत भूमिका के रूप में दिखाया जाना

पाठ्य - पुस्तक विश्लेषण हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 द्वारा निर्मित कक्षा 7 की नागरिक शास्त्र की पुस्तक 'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन - 2' को देखें। यह पुस्तक कुल 5 इकाइयों सहित 10 अध्याय में युक्त है। समाज में व्याप्त असमानताओं की चर्चा कहानियों व चित्रों के माध्यम से की गई। यहाँ जो बात ध्यान देने योग्य है, वह यह है कि पाठ के आरंभ में 13 चित्रों को दिखाया गया है जिसमें 6 चित्र महिलाओं पर हैं। इनमें एक महिला शिक्षिका के रूप में, दो घरेलू कामगार, एक गृहिणी, परामर्शदाता व मीडिया-कर्मी के रूप में दिखाई गई है। जेंडर लेंस से देखने पर यही प्रतीत होता है कि महिलाओं को उनकी परंपरागत भूमिका के रूप में ही दिखाया गया है जबकि पुरुषों को उद्योगपति, सरकारी अधिकारी, व्यापारी, कारीगर, छात्र, किसान, बेरोजगार के रूप में दिखाया गया है।

Scanned with CamScanner

3. पुरुषवादी विचारधारा की अधिकता

अधिकतर पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि औपचारिक विद्यालय पाठ्यक्रम में पुरुषवादी विचारधारा अधिक पाई जाती है व महिला पक्ष की उपेक्षा की गई है।

4. लैंगिक भेद को दर्शाती पाठ्यपुस्तकें

पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान को विद्यालयों में अधिकारिक ज्ञान के रूप में देखा जाता है। इनमें जो ज्ञान/सूचना/भाषा/चित्र आदि प्रयुक्त किये गये है वह लैंगिक भेद को दर्शाते है।

5. जेंडर अनुसार विषयों का विभाजन

यह पाया गया है कि वह विद्यालयों में लड़कियों को 11वीं कक्षा में अतिरिक्त विषय के रूप में सौन्दर्य कला, सिलाई - कढ़ाई, पेंटिंग व पाक कला में से एक को चुनना होता है जबकि लड़को को बेसिक कम्प्यूटर, टाइपिंग, पेंटिंग में से एक का चयन करना होता है। कुछ विद्यालयों में गृहविज्ञान बालिकाओं के लिए अनिवार्य है। जबकि बालक उसके बदले शारीरिक शिक्षा का चयन कर सकते है। विषयों के चयन के अवसर को लेकर इस प्रकार के दोहरेपन से यह सवाल उठता है कि क्यूँ बालिकाओं को ही ऐसे विषयों में प्रशिक्षण देने पर बल दिया जा रहा है जो जेंडर विभक्त समाज मे उनकी भूमिका निर्धारित करते है। यहाँ ये कहना गलत न होगा कि विषयों का यह विभाजन मात्र ज्ञान के वितरण का मसला नहीं है बल्कि ये भविष्य की भूमिका के निर्धारण का भी मामला है।

6. पाठ्यपुस्तकों में पुरुष नेताओं को ही दर्शाना

राज्य शासन पर आधारित पाठों में पाठ्यपुस्तकों में समझ विकसित करने के लिए जिस शख्सियत को बहुत दमदार रूप में दिखाया जाता है जो शासन के गैर - जिम्मेदाराना व्यवहार के विरोध पर ऊँची बुलन्द आवाज में मांग करता है वह एक पुरुष नेता होता है, क्या यहाँ पर भी जेंडर भेद नजर नहीं आता? क्या राजनीतिक सम्मेलनों, सरकार विरोधी प्रदर्शनों या नेता के रूप महिला को दिखाकर छात्र - छात्राओं की अलग तस्वीर नहीं दिखाई जा सकती थी? यह प्रश्न चिंतनीय है।

7. महिलाओं को निर्धारित भूमिका में ढालने के उद्देश्य की पूर्ति

भारतीय शिक्षा की अवधारणा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर चर्चा करते हुए करुणा चानना कहती है कि हालांकि महिलाओं की शिक्षा ने 19 वी सदी के पूर्व में भी समाज सुधारकों को अपनी ओर आकर्षित किया था और 19 वी सदी के अंत में ये आवाजें तेज हो गई। इस समय शिक्षित पति या विवाह के लिए शिक्षित लड़कियों को तरजीह देने लगे। अन्य तथ्यों के साथ इस तथ्य ने भी लड़कियों की शिक्षा पर बल दिया और अभिभावकों को अपनी बेटियों को स्कूल भेजने को प्रेरित किया। इस प्रकार सभी प्रकार के प्रयासों ने जहाँ महिलाओं की शिक्षा की बात की, वो उन्होंने विद्यालय पाठ्यक्रम के जरिए पारंपरिक भूमिका को सुदृढ़ करने के विचार को भी बढ़ावा दिया। उपरोक्त सभी तर्कों व अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि महिलाओं को शिक्षित करने के पीछे उन्हें ज्ञान देने की मंशा से अधिक उन्हें उनकी निर्धारित भूमिका में ढालने का उद्देश्य अधिक स्पष्ट दिखाई देता है।

8. पाठ्यपुस्तकों द्वारा सामाजिक लिंग तैयार करना

पाठ्यपुस्तकों में बहुत ही बढ़िया तरीकों से यह बताया जाता है कि किस प्रकार एक बालक (लड़का व लड़की) में सामाजिक लिंग तैयार किया जाता है। कहानी के जरिये घर के काम का महत्व बताया जाता है परंतु किसी भी वाक्य या चित्र के माध्यम से छात्र-छात्राओं को यह नहीं बताया जाता कि घरेलू कार्य क्यों महिलाओं के ही माने जाते हैं जबकि एक पुरुष भी इन सभी कामों को उतनी ही निपुणता से कर सकता है।

इसी प्रकार कई अन्य शोध अध्ययन भी यह दर्शाते हैं कि विद्यालयों में औपचारिक व छद्म पाठ्यक्रम लड़कों और लड़कियों के मध्य विषयों का चयन संबंधी निर्णयों में जेंडर आधारित विचारों को चुनौती देने के बजाय इसे बनाए रखने पर बल देते हैं।

21 वीं सदी के बदलते सामाजिक परिवेश में एक स्वतंत्र चेतना युक्त नारी को गढ़ने के लिए शिक्षा को अधिक

संवेदनशील होने की जरूरत है। इसके लिए विद्यालयी वातावरण में जेंडर असमानता पर प्रकाश डालने की आवश्यकता है और यह अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि विद्यालय का बालक के समाजीकरण में गहरा एवं बहुत गहरा संबंध है। अतः आवश्यकता है विद्यालयी वातावरण को लिंग संवेदनशील बनाने की जो स्त्री की उचित - याथपूर्ण एवं मानवीय छवि विकसित करें।

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों में भी इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा जा रहा है कि लैंगिक समानता के दृष्टिकोण का विकास करने वाली विषय सामग्री इनमें किया जाए। पाठ्यपुस्तक में बच्चों में लैंगिक समानता का विकास करने वाली विषयसामग्री का समावेश हो, तो निश्चित रूप से स्वस्थ मानसिकता लेकर बच्चों का विकास होगा। इसका कारण यह है कि पाठ्यपुस्तकें ही एकमात्र ऐसा साधन है जो विद्यालय जाने वाले प्रत्येक बच्चे को सुलभ होती है और पाठ्यपुस्तकें ही एकमात्र ऐसा संसाधन है जो शिक्षण प्रक्रिया के दौरान प्रत्येक शिक्षक के पास उपलब्ध होता है। शिक्षक भले ही शिक्षण प्रक्रिया के दौरान किसी भी सहायक सामग्री का उपयोग न करे पर पाठ्यपुस्तक का उपयोग तो प्रत्येक शिक्षक करता ही है।

Scanned with CamScanner